NJESR/August-2022/Volume-4/Issue-8 E-ISSN-2582-5836

DOI-10.53571/NJESR.2022.4.8.5-9

हिन्दी भाषा का बढ़ता प्रयोग एवं सरलीकरण

संगीता झगटा

सह आचार्या

राजकीय कन्या महाविद्यालय शिमला – 01

(Received : 11 July 2022/Revised : 20 July 2022/Accepted : 05 August 2022/Published : 15 August 2022)

Sangeetajhagta0@gmail.com

प्रस्तावना –

मनुष्य अन्य प्राणियों से इसलिए भिन्न है क्योंकि वह भाषा के माध्यम से समाज से जुड़ता है। व्यक्तिगत ज़रुरतों से लेकर मनोरंजन तक की तमाम ज़रुरतें वह भाषा के माध्यम से पूरी करता है। भाषा संप्रेषण एक कला है, जो इसमें जितना माहिर होगा, उसे जीवन में सफलता मिलेगी। उदाहरण के तौर पर एक ही बात को दो अलग-अलग तरह से कहा जा सकता है – एक राजा ने एक ज्योतिषी को बुलाया और पूछा कि महाराज मेरी आयु कितनी है, ज्योतिषी ने जवाब दिया, महाराज आप निन्यानवे वर्ष की उम्र पूरी कर मर जाएंगे। यह सुनते ही राजा क्रोध से भर गया और ज्योतिषी को फाँसी की सज़ा सुना दी। राजा ने दूसरे ज्योतिषी को बुलाया , उससे भी वही प्रश्न पूछा, उसने उत्तर दिया, आप शतायु होंगे। (आप सौ साल जीवित रहेंगे) इतना सुनते ही राजा प्रसन्न हो गया और ज्योतिषी को सौ गांव ईनाम में दिए। दोनों ने बात एक ही कही, परन्तु कहने की भाषा अलग होने के कारण एक को मृत्यु दण्ड मिला और दूसरे को पुरस्कार।

भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपना संदेश श्रोता तक पहुँचाता है और श्रोता उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। आपकी भाषा की पकड़ जितनी अधिक होगी, संप्रेषण उतना अधिक प्रभावशाली होगा। मानव भाषा के विकास से संप्रेषण के अनेक रूप अस्तित्व में आए हैं और इन रूपों में आज लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। इंटरनेट एवं वेबसाइट इसकी गवाही देते हैं। भाषा आज सीमाओं के बंधन तोड़कर खुले संसार में विचरण करने लगी है। संचार के क्षेत्र में जो प्रद्यौगिकी विकसित हुई है उसके कारण लाखों-करोड़ों लोगों तक किसी भी बात को पहुँचाना इतना आसान हो गया है कि आज से पचास साल पहले उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। रूस और यूक्रेन युद्ध इसका ताज़ा उदाहरण है।

हिन्दी भाषा का बढ़ता प्रयोग एवं सरलीकरण

भाषा चाहे कोई भी हो, समाज में परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के साथ संप्रेषण करने का हमारे पास सशक्त साधन है, परन्तु स्वतंत्रता के बाद हमारे सामने भाषा की समस्या का प्रश्न उत्पन्न हुआ कि किस भाषा को राष्ट्रभाषा चुना जाए। उसी समय सभी भारतीय विद्वानों, राजनीतिज्ञों ने एक मत से **'हिन्दी'** को संवैधानिक रूप से राष्ट्रभाषा के रूप में चुना और संविधान के अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को संपूर्ण भारत को मुखरित करने की शक्ति प्रदान की जाए।

विश्व में विज्ञान और प्रद्यौगिकी के तेज़ी से फैले प्रसार के साथ भारत में भी नवीनतम ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी की आँधी उमड़ पड़ी। इस कारण हिन्दी को नये महत्वपूर्ण भाषिक दायित्व और अभिव्यक्ति से सर्वथा

नवीनतम क्षेत्रों से गुज़रना पड़ा। आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक संदर्भों में बदलाव के साथ हिन्दी के ऐसे रूप की आवश्यकता पड़ी जो प्रशासन और ज्ञान-विज्ञान, प्रद्यौगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्त कर सके। इसी कारण आज हिन्दी की नयी भाषिक संरचना का रूप हमारे सामने उभर कर आया और यह पत्र लेखन इसी कड़ी में नया प्रयोग है। आवश्यकताओं की प्रायोगिक प्रतिपूर्ति हेतु हिन्दी भाषा का सरलीकरण करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

राजभाषा हिन्दी धीरे-धीरे देश में सरकारी काम-काज की भाषा बनती जा रही है। सरकारी कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए ज़रूरी है कि कार्यालयी काम-काज की '**मानक शब्दावली**' का निर्माण किया जाए, जिससे पत्र व्यवहार में समरूपता रहे। राजभाषा विभाग ने अब सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी को बदलने के लिए आवश्यक प्रयास तेज़ कर दिए हैं। कार्यालयों में प्रयोग होने वाली हिन्दी के कठिन शब्दों की जगह सामान्य हिन्दी और अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग करने के निर्देश दिए गए हैं। जनसामान्य तक ज्ञान और सूचना पहुँचाने की दृष्टि से हिन्दी को सहज, सरल और संप्रेषणीय बनाने की ज़ोरदार पहल हो रही है।

आधुनिक युग में मनुष्यों के संपर्कों का दायरा विस्तृत हुआ है। आज का मनुष्य अनेक संस्थाओं से जुड़ा होने के कारण विविधताओं से संबन्ध स्थापित करता है। संबंधों को सुदृढ़ करने का साधन है भाषा। सूचना प्रद्यौगिकी के चलते हिन्दी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच गई है। इंटरनेट के साथ ही वह अब मोबाइल व एस. एम. एस. की भाषा भी बन गई है। सूचना क्रांति के प्रभाव से अब हिन्दी की संरचना पूरी तरह बदल गई है। सूचना प्रद्यौगिकी के कारण हिन्दी केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व में इसका प्रचार-प्रसार हो रहा है।

हिन्दी विश्व की एकमात्र ऐसी स्मृद्ध भाषा है जिसने भारतीय साहित्य, कला, ज्ञान तथा संस्कृति को न केवल अभिव्यक्ति प्रदान की है, बल्कि उसे संजोये रखने में भी अहम भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर राजनीतिक, साँस्कृतिक तथा सामाजिक आदि सभी स्तरों पर हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के रूप में जनमानस में विराजमान है।

हिन्दी भाषा का व्याकरण एवं इसकी लिपि (देवनागरी) का अपना वैज्ञानिक आधार है। वैज्ञानिक पद्धत्ति पर आधारित होने के कारण इसे जनमानस तक पहुँचाना अधिक आसान है, क्योंकि साधारण से साधारण समाज का व्यक्ति इसे संप्रेषित कर सकता है। आवश्यकता है प्रचार व प्रसार की, मान व सम्मान देने की व इसके महत्व को समझने की। यदि भारत का एक-एक व्यक्ति प्रण करे कि हिन्दी का विश्व में प्रसार करना है तो कोई आश्चर्य नहीं होगा, कि हिन्दी विश्व के मानस पटल पर छा जाएगी। आज विश्व का शायद कोई कोना हो जहाँ भारतीय व्यक्ति की पहुँच न हो। सूचना विस्फोट के इस युग में हिन्दी भाषा नई दिशा की ओर अग्रसर हो रही है। नये अनुसंधान के आधार पर हिन्दी बोलने वालों की संख्या विश्व स्तर पर प्रथम भाषा का दर्जा पा चुकी है।

आज यह प्रसन्नता का विषय है कि कई शिक्षण संस्थानों में स्नातक स्तर तक विज्ञान विषय हिन्दी में पढ़ाया जाने लगा है। नई शिक्षा नीति के तहत पूरे भारत में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाएगा, कई राज्यों ने तो इसे पढ़ाना शुरु भी कर दिया है। इसके साथ सभी भारतीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी को स्नातक स्तर पर अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है।

आज हिन्दी के बढ़ते प्रभाव को नहीं नकारा जा सकता, क्योंकि आज संघ लोक सेवा आयोग में प्रतियोगी परीक्षाओं में न केवल हिन्दी माध्यम को स्वीकृति प्रदान की गई है, बल्कि यह अनिवार्य विषय के रूप में भी सम्मिलित है और हिन्दी माध्यमों से प्रतिभागी की वरियता सूची भी तय होती है।

हिन्दी का सरलीकरण व रोज़गार

हिन्दी माध्यम से रोज़गार के साधन भी बढ़े हैं। आज चाहे कोई भी औद्यौगिक संस्था है, उसे हिन्दी अधिकारी की आवश्यकता है, जो दैनिक कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रयोग में सहायता करते हैं। आज पेशेवर अनुवादकों के रूप में भी लोगों को रोज़गार उपलब्ध हो रहा है। विदेशी एजेंसियों से भी अनुवाद परियोजनाओं के अवसर प्राप्त होते हैं। यह कार्य आसानी से इंटरनेट के ज़रिए किया जा सकता है। आज कोई भी व्यक्ति रेड़ियो, टी. वी., सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट राइटर, गीतकार, डायलॉग राइटर के रूप में भी काम कर सकता है। सिनेमा ने हिन्दी भाषा का जितना सरलीकरण किया है, शायद और किसी माध्यम ने किया हो। आज हिन्दी सिनेमा को समझने व देखने के लिए विश्व के लाखों लोग हिन्दी सीखते हैं। सिनेमा ने हिन्दी भाषा को जन-जन के घर पहुँचाया है। आज औद्यौगिक वैश्वीकरण के साथ-साथ हिन्दी का वैश्वीकरण भी आवश्यक है, तभी हम अपनी सच्ची पहचान विश्व में बना पाएंगे। आज हिन्दी में एकरूपता लाने के प्रयास लगातार हो रहे हैं। इसके लिए अनेक कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं।

आज युग बदल रहा है, चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, कारखानों ने जीवन के व्यवहार क्षेत्रों में विस्तार किया है। इस आधुनिकता ने आदमी की सोच को बदला है। नयी सोच आधुनिक है। भाषा आदमी की सोच को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यदि भाषा स्थिर रहे, तो बदले हुए ज़माने की सोच को अभिव्यक्त नहीं कर सकती। आज हिन्दी सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित कर रही है और अंग्रेजी तो हिन्दी से अलग हो ही नहीं सकती। आज अंग्रेजी के अधिकतर शब्द हिन्दी में लिखे जाते हैं, जिसे **हिंग्लिश** नाम दिया गया है।

वक्त आधुनिक हो रहा है, जीवन आधुनिक हो रहा है तो हिन्दी भाषा स्थिर व जड़ कैसे रह सकती है। इसका भी आधुनिकीकरण होना चाहिए। हन्दी भाषा में वह शक्ति है जो आधुनिक युग की मांग को पूरा कर सकती है। हिन्दी भाषा की अपनी समस्याएँ हैं, जटिलताएँ हैं परन्तु फिर भी राजकार्यों में प्रसार बढ़ा है। आज विभिन्न राज्यों में हिन्दी प्रशासनिक अभिव्यक्तियों का माध्यम है।

बैंकों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है, कारण स्पष्ट है कि बैंक दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच गए हैं और कारोबार फैलानै के लिए जनता की भाषा का प्रयोग या जनसाधारण की भाषा का प्रयोग आवश्यक है। आज बैंक का कार्य हिन्दी में होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य स्वयं कर सकता है, उसे दूसरों पर निर्भर नहीं होना पड़ता। भाषा के सरलीकरण के कारण ही ग्रामीण व्यक्ति अपना कार्य स्वयं कर पायेगा, यहाँ हिन्दी के महत्व को स्पष्ट समझा जा सकता है। हिन्दी वैज्ञानिक भाषा होने के कारण आज कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर हिन्दी भाषा में तैयार किये जाने लगे हैं। वाणिज्य, विधि तथा ज्योतिष जैसे कठिन विषय को हिन्दी माध्यम से कम्प्यूटर में पढ़ना आसान हो गया है। आज आप अपनी जन्मपत्री मिनटों में कम्प्यूटर से तैयार कर सकते हैं।

यदि भाषा नये विचारों – ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति के योग्य नहीं बनती, तो पिछड़ जाती है। परंतु हिन्दी सभी विषयों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम है। अब जटिल से जटिल, तकनीकि विषयों को हिन्दी में अभिव्यक्ति प्रदान हो रही है। हिन्दी भाषा का प्रयोग व्यापक रूप से कम्प्यूटर पर हो रहा है, सिर्फ ज़रुरत है संकुचत दृष्टिकोण को त्यागने की, हमें अपने शब्द भण्डार को विस्तृत करना होगा, इसके लिए आवश्यक है अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण करना। हिन्दी आज बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, कॉलेज जैसे शब्दों के बिना अधूरी लगती है।

जनसंचार माध्यम आज राष्ट्रीय स्तर पर विचार, अर्थ, राजनीति, यहाँ तक कि संस्कृति को भी प्रभावित करने में सक्षम है। आज समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, इलैक्ट्रॉनिक मीड़िया द्वारा सूचनाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए इंटरनेट को अपनाया गया है। आज सर्वाधिक पत्र हिन्दी में प्रकाशित हो रहे हैं और इन्हें इंटरनेट पर पढ़ना हर एक व्यक्ति के लिए संभव हो गया है।

आज सभी का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के साथ संप्रेषण करना है। आज हिन्दी के बिना संचार माध्यमों का चलना असंभव है। हिन्दी विज्ञापनों के बिना कोई भी वस्तु बेचना आज संभव नहीं लगता, जितना बड़ा बाज़ार भारत में है शायद ही विश्व के किसी कोने में हो, इसलिए आज प्रत्येक संचार माध्यम (रेड़ियो व टेलीविजन) से हिन्दी के विज्ञापन आकर्षक भाषा में प्रसारित किये जाते हैं –

“हॉकिन्स लाइए

40 प्रतिशत ईंधन खर्च बचाइए”

आज छोटी वस्तु से लेकर बड़ी वस्तु तक सभी कुछ आकर्षक विज्ञापनों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाता है। विज्ञापन की भाषा में हिन्दी की रोचकता स्पष्ट परिलक्षित होती है, जो जनसाधारण को प्रभावित कर सके। हिन्दी भाषा के सरलीकरण से ही यह संभव हो पाया है।

यहाँ तक कि आज सेना में भी हिन्दी शब्दों का प्रचलन बढ़ा है। जहाँ पहले सेना के जवानों द्वारा गुप्त भाषा के रूप में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाता था, वहीं आज अपने देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग किया जाता है ताकि उनके अंदर राष्ट्रप्रेम की भावना का अधिक प्रसार किया जा सके। भारतीय जवानों को हिन्दी सिखाने का प्रशिक्षण विभिन्न सेना संस्थाओं में दिया जाता है। ताकि वे आम जनमानस से जुड़कर उनकी भावनाओं को समझ सके। यह हिन्दी भाषा के सरलीकरण से ही संभव हो पाया है।

सारांश

भाषा मानव समुदायों के सदस्यों को एक-दूसरे के निकट लाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। हिन्दी भाषा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारतीय संस्कृति, योग साधना आदि को सिखाने के लिए पूरे विश्व के लोग हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। वहीं विश्व राजनीति को समझने के लिए भारतीय दृष्टिकोण को समझना आवश्यक हो गया है, यह तभी संभव है जब विश्व के लोग हिन्दी भाषा को समझने में सफल होंगे। इसिलिए आज हन्दी भाषा विश्व मानचित्र के पटल पर उभरकर सामने आई है।

भाषा बड़ी बलवान होती है, अतः इसका उपयोग सावधानी से करना चाहिए। भाषा निर्माण भी कर सकती है और विध्वंस भी। हिन्दी भाषा आज भारत का नया निर्माण कर रही है और विश्व में अपनी नयी पहचचान स्थापित कर रही है। आज हिन्दी भाषा तीव्र गति से प्रचारित व प्रसारित हो रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इस तरह के प्रयास हमेशा करते रहें। 10 जनवरी को विश्व के लगभग 180 देशों में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। भले ही हमारे देश में ही कुछ लोग हिन्दी के उपयोग को लेकर कभी-कभार बेवजह का विवाद खड़ा कर अपनी राजनीति चमकाने का प्रयास करते दिखते हैं लेकिन हर भारतीय के लिए गर्व की बात यह है कि दुनिया भर में अब हिन्दी चाहने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हिदी अखबारों की वेबसाइट ने करोडों नये हिन्दी पाठकों को अपने साथ जोड़कर हिन्दी को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी में इंटरनेट पर सामग्री पढ़ने वाले प्रति वर्ष 94 फीसदी लोग बढ़ रहे हैं। आज हिन्दी अपने तमाम प्रतिद्वन्दियों को पीछे छोड़ते हुए लोकप्रियता का आसमान छू रही है।

संदर्भ सूची –

लेखक का नाम	प्रकाशन वर्ष	उपयोगी पुस्तकें व प्रकाशक
श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ	1978	भाषा शिक्षण, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ	1980	हिन्दी भाषा-संरचना और प्रयोग, आलेख प्रकाशन
हीरानन्द, सच्चदानंद अज्ञेय	1984	सर्जन और संप्रेषण, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली
तिवारी, भोलानाथ	1977	शैली विज्ञान, शब्दकार, नई दिल्ली